जिस देश का प्रधानमंत्री हत्यारा नही होता

आम तब भी बौरते हैं
नदी तब भी हुमकती है
कुत्ते तब भी भौंकते हैं
तब उस देश की नदियों में
विधर्मियों का खून नहीं बहता
आम पेटों में पककर सड़ नहीं जाते
कुत्ते सिर्फ हत्यारों के शिनाख्त के लिए
भौंकते नहीं दिन-रात

जिस देश का प्रधानमंत्री हत्यारा नहीं होता
उस देश की राजनीति में
हत्या का अर्थात वोट नहीं होता
वहाँ चुनाव
शिक्षा और स्वास्थ के मुद्दों पर लड़े जाते हैं
वहाँ वतनपरस्ती एक धर्म की जागीर नहीं होती
और अपना हक माँगते नौजवानों के
नहीं फोड़े जाते हैं सर
नहीं नीछे जाते हैं स्तन
हत्या हत्यारे के हाथ में नहीं मस्तिष्क में रहती है
हत्या से भरे हुए मस्तिष्क के हाथ गर लग जाए शासन
तब सारा का सारा मुल्क

कत्लगाह में हो जाता है तब्दील
जिस देश का प्रधानमंत्री हत्यारा नहीं होता
उस देश
लिली बेखौफ फूलती है
झरना निर्बाध बहता है
और अधपके आमों को तोड़ ले जाने के लिए
होते हैं बहुत सारे बच्चे ।

- हरमीस बोहेमियन

दो कवितायें / शेली किरण

एक

देवी नहीं हूँ मैं,
मुझे मंदिर में ना सजाया जाए,
रक्त मज़्ज़ा से बनी हूँ,
जिन्दा रहने के क़ाबिल बनाया जाए।
आह भरने की पूरी आज़ादी है,
किसी पर मरने की पूरी आज़ादी है,
मेरी सोच पर,मेरे होश पर,
कोई पहरा ना बिठाया जाए ।
आदम की नस्ल की हूँ मैं भी,
रूप ,गंध के मोह से पुलकित,
मानवीय हूँ मानव प्रेम से प्रफुलित,
सही ग़लत जानती हूँ मैं भी,
मुझे रोज़ नया सबक़ ना रटाया जाए ।
दीमक लगी है तुम्हारे उसूल को,
नींव इसकी खोखली कर चुके चूहे,
मृत हो गयी है प्रकृति तुम्हारी दुनिया में,
भटक रहीं हैं हर ओर ज़िंदा रूहें ,
आइना तोड़ मत देना घबरा कर ,
आइना तुमको जो रोशनी में दिखाया जाए ।

दो

कवि ने प्रेम किया,
हो गया कर्ण,
उतार दिए कुण्डल,
और कवच,
इच्छामृत्यु का वरण,
श्वास में हारा जीवन,
रह गया केवल प्रेम !
ममता का घट ,
उमड़ता है तुम्हें देख,
ज्यूँ प्रसूता देखती शिशु नवजात,
ज्यूँ वन महकता कोमलता से,
खिले लाख परिजात ,
बँटी रही है स्त्री हमेशा से,
जब हो जाती है प्रेयसी,
प्रेम हो जाता है अमर,
घटता नहीं ,
उसका अक्षय पात्र,
रत्ती भर !

दोस्तो, आप एनएसडी में दाख़िले की तैयारी कर रहे हैं, अच्छी बात है, एक-दो बातें आपके सोच-विचार के लिये

राजेश चंद्र

(1) क्या आपने इसके लिये अपने माता-पिता को किसी नसीरुद्दीन शाह, ओमपुरी, अनुपम खेर, इरफ़ान खान या नवाज़ुद्दीन सिद्दीकी का नाम लेकर राज़ी किया है? क्या आपने उन्हें यह समझाया है कि अगर एनएसडी की ट्रेनिंग के बाद इन अभिनेताओं की तरह आप कामयाब नहीं भी हुए तब भी आप इतना कमा पायेंगे कि ज़िन्दगी आराम से कट जायेगी? क्या आपने यह तर्क भी दिया कि एक आइएएस को जितने लोग जानते और पहचानते हैं, उससे ज़्यादा तो आपको एक फिल्म या सीरियल के बाद ही जानने और मानने लगेंगे? सम्भव है आपने उन्हें यह भी बताया हो कि अभिनेता एक काम से जितना कमा सकता है उतना कोई और काम या नौकरी करते हुए कोई कमा ही नहीं सकता! हो सकता है आपके माता-पिता अपनी कल्पना में यह दृश्य देख रहे हों कि एनएसडी की ट्रेनिंग पूरी होते न होते आपको किसी रामगोपाल वर्मा, महेश भट्ट, करण जौहर या अनुराग कश्यप ने अपनी फ़िल्मि के लिये साइन कर लिया है! रातों रात आपके साथ उनकी भी ज़िन्दगी बदल गयी है। सारे कर्जे एक साथ चुका दिये गये हैं! आप ऐसा सोच रहे हैं तो आप सच्चाई से कोसों दूर हैं। एनएसडी की ट्रेनिंग से ऐसा कोई जादू या चमत्कार न पहले किसी के जीवन में घटित हुआ है न अब ऐसी कोई सम्भावना है।

(2) क्या आपको मालूम है कि एनएसडी में वर्षों से प्रतिभाशाली और एनएसडी के बारे में थोड़ी भी सही जानकारी रखने वाला रंगकर्मी क्यों नहीं आने को तैयार है? मैं बताता हूं। इसके पीछे सबसे बड़ी वजह है प्रशिक्षण को लेकर एनएसडी का उदासीन रवैया। एनएसडी की आज दो ही प्राथमिकताएं हैं- पहली थियेटर के ग्रांट का वितरण और बन्दोबस्त करना, तथा दूसरी, वर्ष भर भारत रंग महोत्सव की तैयारी में लगे रहना। चूंकि इन दोनों गतिविधियों में भ्रष्टाचार की भरपूर सम्भावनाएं हैं, इसलिये वे अपना सारा समय और ध्यान इसी में लगाते हैं। प्रशिक्षण उनके लिये सर्वथा अनुत्पादक और फालतू काम है। इस बात की पुष्टि आप एनएसडी में ट्रेनिंग ले रहे किसी भी छात्र से कर सकते हैं। एक बार दाखिला लेने के बाद जब छात्रों को असलियत का पता चलता है तो उनके पास पछताने के अलावा कुछ नहीं बचता। वे किसी से यह सच्चाई कह भी नहीं पाते।

(3) एनएसडी एक ट्रेनिंग स्कूल है लेकिन क्या आपको मालूम है कि वहां शिक्षकों का कैसा भयावह अभाव है? अभिनय पढ़ाने के लिये इस वर्ष के बाद वहां कोई शिक्षक नहीं होगा। थियेटर डिज़ाइन पढ़ाने के लिये, थियेटर म्यूज़िक, लाइटिंग, स्पीच एंड वॉयस, स्टेज क्राफ़्ट, मेकअप जैसे विषयों को पढ़ा सकने लायक एक भी योग्य और स्थायी शिक्षक उनके पास नहीं है। हर वर्ष वे इन विषयों को पढ़ाने के लिये स्कूल के ऐसे स्नातकों को गेस्ट टीचर के तौर पर रख लेते हैं, जिनके पास न विषय का ज्ञान होता है, न फील्ड में काम करने का कोई अनुभव। मकसद केवल ट्रेनिंग के नाम पर खानापूर्ति करना और अपने नाकारा स्नातकों का पेट पालना होता है। ऐसे में एनएसडी की ट्रेनिंग से आपको क्या हासिल होगा, आप खुद भी कल्पना कर सकते हैं।

(4) पिछले पन्द्रह-बीस वर्षों में एनएसडी से ट्रेनिंग लेने वाले अधिकांश रंगकर्मियों का जीवन असफलता, हताशा, कुंठा, पछतावा, नाकारापन और शर्मिन्दगी से भरा मिलता है। चूंकि थियेटर करने और एनएसडी में ट्रेनिंग लेने के लिये वे दुनिया भर के झूठ गढ़ चुके होते हैं, इसलिये वे बाद में भी किसी से अपनी वास्तविक हालत और नाकामी की चर्चा कर पाने का साहस नहीं जुटा पाते। आपने वह कहावत सुनी होगी- %भई गति सांप छछून्दर केरी!% घर से बग़ावत कर प्रेम विवाह करने वालों और एनएसडी में ट्रेनिंग लेने वाले छात्रों की हालत एक जैसी होती है। चूंकि इसके लिये वे दुनिया भर के पापड़ बेलते हैं, इसलिये असफल होने पर किसी से शिकायत करने लायक नहीं होते। सफलता का औसत इतना कम हुआ करता है कि वह खाने में नमक का काम करता है। आज भी एनएसडी अपनी सफलता का उदाहरण थियेटर से नहीं, फिल्मों से देती है! ये नाम भी पिछले 30-40 वर्षों में नहीं बदले। एक-दो नये नाम वे इस सूची में जोड़ने की कोशिश करते हैं। हालांकि फिल्मों में सफलता पाने वाले ये गिनती के पांच-सात लोग अपनी मेहनत और प्रतिभा के बल पर ही पहचान बनाते हैं, पर एनएसडी उनकी सफलता को अपने खाते में लिख लेती है। इससे वे नये आने वाले छात्रों में यह भ्रम बनाये रखना चाहते हैं कि एनएसडी की ट्रेनिंग भी किसी काम की है! उनकी दूकान चलती रहती है।

(5) एनएसडी से ट्रेनिंग लेने वाले छात्रों को चूंकि आगे का कोई रास्ता थियेटर में नहीं मिलता, इसलिये स्कूल अपने स्नातकों का पेट चलाने के लिये कुछ कल्याण के काम भी करता है। ट्रेनिंग लेने वाले ऐसे छात्र जो पूरी तरह स्वामीभक्त होते हैं, कभी शिकायत या विरोध नहीं करते, उन्हें 5-6 वर्षों के लिये रंगमंडल में रख लिया जाता है। अन्य छात्रों को कुछ प्रोजेक्ट दे दिये जाते हैं, ताकि ट्रेनिंग के फौरन बाद उन्हें यथार्थ की ठोस ज़मीन का आभास न हो। साल-दो साल बाद ही यह स्थिति बदल जाती है और ये प्रशिक्षित छात्र मुम्बई के बॉलीवुड में खो जाते हैं या ग्रांट से थर्ड क्लास थियेटर करके अपना गुज़ारा चलाते हैं। चूंकि एनएसडी दाखिला लेने वाले छात्रों को उनकी भाषा से, ज़मीन से, परंपरा से और इतिहास से काट देती है, इसलिये ट्रेनिंग के बाद रंगकर्मी अपने पुराने संगठन में नहीं लौट पाता। उसे सब कुछ शून्य से शुरू करना पड़ता है। सभी रंगकर्मियों में न इतना धैर्य होता है, न इतनी क्षमता होती है, इसलिये वे मुम्बई का रुख करते हैं।

(6) फिल्मों या टीवी सीरियल में काम करना बुरी बात नहीं है। पर सवाल उठता है कि इसके लिये एनएसडी में तीन-चार साल बर्बाद करने में कौन सी बुद्धिमानी है? फिल्मों में काम करने के लिये रंगमंच की ट्रेनिंग किसी काम की नहीं होती, क्योंकि वह एक अलग दुनिया है। आम तौर पर फिल्में बनाने वाले निर्माता-निर्देशक थियेटर की सांस्थानिक ट्रेनिंग लेकर आने वाले लोगों या अभिनेताओं को काम देने में काफी हिचकिचाते हैं। उन्हें यह डर रहता है कि ट्रेन्ड लोग उनके हिसाब से काम नहीं करेंगे और हमेशा उनके लिये मुश्किलें पैदा करेंगे। शायद यही कारण है कि एनएसडी के ग्रेजुएट मुम्बई में आम तौर पर यह तथ्य छिपाते हैं कि वे कहां से ट्रेनिंग लेकर आये हैं। उनके हिसाब से एनएसडी का ठप्पा उनकी नकारात्मक छवि बनाता है। यह सही भी है।

(7) एनएसडी की ट्रेनिंग आज रंगकर्मी नहीं मीडियॉकर पैदा करती है। वह अब नाटक करने की, कथ्य समझने की तमीज़ नहीं सिखाती, सिखा भी नहीं सकती क्योंकि उसके पास विशेषज्ञ शिक्षक नहीं हैं, इसलिये वह उन्हें कुछ ट्रिक्स और फारमूले सिखा देती है, पांच लाख-दस लाख खपाना सिखाती है, गलत-सही बिल बनाना और प्रोजेक्ट प्रपोज़ल बनाना सिखाती है, ताकि अनुदान के लिये फ़ाइट करने लायक नाटक उसके प्रशिक्षित लोग किसी प्रकार कर लें। यदि आज अनुदान बंद हो जाये तो 99 फीसदी एनएसडी से निकले रंगकर्मी रंगकर्म छोड़ देंगे। अनुदान अपने साथ एक संस्कृति भी लेकर आता है, भ्रष्टाचार, समझौतापरस्ती, अवसरवाद और लोलुपता की! रंगकर्मी एक बार समझौतापरस्त और बेईमान हो गया तो फिर वह रंगकर्मी कहां रह गया! वह मात्र एक व्यवसायी की तरह आत्मकेन्द्रित और सामाजिक सम्मान से रहित जीवन जीने के लिये अभिशप्त हो जाता है। वह कलाकार का जीवन नहीं जी पाता।

(8) तो फिर क्या किया जाये? सबसे पहले तो इन सारी वस्तुस्थितियों को देखते हुए आप यह तय कीजिये कि आप कैसा जीवन चाहते हैं? क्या आप जीवन भर एनएसडी के कन्धे पर बैठ कर, उसका खून चूसते हुए या एनएसडी के निदेशक को खुशामद करते हुए दया और करुणा पर निर्भर जीवन जीना चाहते हैं या सम्मान और आत्मनिर्भरता का जीवन जीना चाहते हैं? अगर आपको थियेटर करना है तो आज एमपी ड्रामा स्कूल जैसे अपेक्षाकृत बेहतर ट्रेनिंग विकल्प आप चुन सकते हैं, जहां ट्रेनिंग की प्रक्रिया ठीक-ठाक है। अच्छे शिक्षक भी उपलब्ध हैं। या फिर आप किसी अच्छी संस्था में नियमित समय देकर भी थियेटर की ट्रेनिंग ले सकते हैं। अगर फिल्मों या टीवी के लिये प्रयास करना चाहते हों तब तो एनएसडी आपके समय, उत्साह और ऊर्जा को पूरी तरह नष्ट कर सकती है। यह चुनाव पूरी तरह गलत होगा। आप किसी फिल्म प्रशिक्षण संस्थान के लिये भी प्रयास कर सकते हैं। पर उसके लिये काफी खर्चीले विकल्प उपलब्ध हैं। थियेटर की ट्रेनिंग आज कई विश्वविद्यालयों में भी उपलब्ध है। हैदराबाद, वर्धा, चंडीगढ़ जैसे विश्वविद्यालय थियेटर की पूरी ट्रेनिंग उपलब्ध करा रहे हैं, जो बहुत कारगर और लाभदायक भी हैं। भविष्य भी अच्छा है।

इतनी बातें इसलिये क्योंकि नयी पीढ़ी को सही जानकारी और मार्गदर्शन देना पुरानी पीढ़ी का दायित्व है। दुर्भाग्य है कि इस दायित्व का आभास आज बहुत कम ही रंगकर्मियों को है। वे चाहें तो रंगमंच की ठोस हकीकतों का ज्ञान देकर नयी पीढ़ी को धोखे से बचा सकते हैं, पर न बता कर वे एक तरह से अपनी असफलताओं और कुंठाओं का बदला नयी पीढ़ी से लेते हैं। इससे शायद उनका अहं तुष्ट होता होगा। ख़ैर आपको बेहतर भविष्य की शुभकामनाएं।

हमारे शहर के टैक्सी स्टैंड पर

पचासों जीपें लगी रहती हैं जिसमें नम्बर के हिसाब से पांच-सात गाड़ियाँ रनवे पर स्टार्ट खड़ी भी मिलेंगी। हर गाड़ी वाले को एक ही जल्दी रहती है कि, गाड़ी फुल हो और हम लेकर उड़ें.. यदि एक भी सवारी या रिक्शा जो टैक्सी स्टैंड पर टैक्सी पकड़ने के लिये पहुंच गया तो गाड़ी के ड्राइवरों के बीच उस सवारी को अपनी टैक्सी में बिठाने की होड़ लग जाती है.. कोई आगे बिठाने का प्रलोभन देता है तो कोई तुरन्त बिठाकर निकलने का... कोई आधे घंटे में पहुंचाने का वादा करता है तो कोई नानस्टाप यात्रा का। यात्री समझ ही नहीं पाता कि वो बैठे कहाँ ? दरअसल इतनी खातिरदारी में वो एक क्षण भूल जाता है कि यह इनका व्यवसाय और कमाने की होड़ का नाटकीय रूप है.....यह इसका कृत्रिम चरित्र है न कि ग्राहक के प्रति इनकी सेवा भावना।

वह लोग उस वक्त तो फूले नहीं समाते जब वह उनको अपने हृदय कक्ष में बिठाने के लिये अपने पूरी ड्राइवर बिरादरी के लोहा लेता है। जबरन हाथ खीचकर अपने बराबर बिठाता है लेकिन वही लोग उस वक्त बहुत ठगे महसूस करते हैं जब वही ड्राइवर उनसे केवल एक रूपये कम होने पर चौराहे पर बेइज्जत करने लगता है यहाँ तक कि कॉलर तक धर लेता है। राजनीति के टैक्सी स्टैंड पर यह वक्त सवारी बिठाने का है। इस वक्त राजनीति के ड्राइवर आपको हाथोंहाथ ले लेंगे.. आपका भारी सामान भी अपने माथे पर रखकर टैक्सी पर चढ़ायेंगे..लेकिन जब वो आपको टैक्सी पर से उतारेंगे तो टैक्सी की छत पर से आपका सामान और आपका सम्मान दोनों उतना सुरक्षित नहीं मिलेगा जितना आपने चढ़ते वक्त महसूस किया होगा॥

- रिवेश प्रताप सिंह